ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-3* April- 2021
Innovation The Research Concept

भरतपुर जिले में मानव संसाधन विकास
Human Resource Development in Bharatpur District

Paper Submission: 05/04/2021, Date of Acceptance: 23/04/2021, Date of Publication: 25/04/2021

शिखा सिंह
शोध छात्रा,
भूगोल विभाग,
महाराजा सूरजमल बृज विश्वविद्यालय,
भरतपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

मानव एक महत्त्वपूर्ण संसाधन है क्योंकि चिन्तन करना मानव का एक विशेष गुण है। अपने इसी गुण के कारण मानव प्रकृति द्वारा दिये गये समस्त संसाधनों का उपयोग करता है तथा इन संसाधनों से ही मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। संसाधन और मानव पारस्परिक रूप से संबंधित होते है। जिसमें मानव महत्त्वपूर्ण होता है क्योंकि मानव अपने विवेकपूर्ण कार्यों द्वारा नई सृष्टि का निर्माण करता है। जिसको मानव सभ्यता कहा जाता है। मानव की पारस्परिक व मानसिक क्षमता ही किसी देश, राज्य, समाज और परिवार को विकसित श्रेणी में खड़ा करने में सक्षम होती है। लेकिन जिन देशों में मानव की उपेक्षा की जाती है या नियोजित ढंग से उनका उपयोग नहीं किया जाता तो पूर्ण मानव संसाधन होने के बाबजूद भी विकसित नहीं हो पाता इसलिए ही मानव संसाधन वह अवधारणा है जो कि जनसंख्या को अर्थव्यवस्था पर उसके दायित्व से अधिक परिसम्पत्ति के रूप में प्रदर्शित करती है। शिक्षा, प्रशिक्षण एवं चिकित्सा जैसी आधारभूत सेवाओं आदि में निवेश के परिणामस्वरूप जनसंख्या मानव संसाधन में बदल जाती है। अर्थात् किसी भी देश का आर्थिक, भौगोलिक विकास प्राकृतिक संसाधनों एवं जनसंख्या के आकार उसकी बनावट एवं कार्य क्षमता पर निर्भर करता है। अतः किसी भी राष्ट्र के लिए उसकी जनसंख्या का पूर्ण सहयोग ही उसको संसाधन की अवधारणा के अन्तर्गत लाता है। मानव संसाधन विकास की मुख्य विधियों के द्वारा उन कुशलताओं और क्षमताओं के बारे में जाना जा सकता है जो कि उच्च स्तर के परिणाम प्रदान करते है। इन सब बिन्दुओं से स्पष्ट होता है कि मानव संसाधन ही एक ऐसा कारक है जो कि किसी को किसी विकसित श्रेणी में स्थान दिलाता है।

Human is an important resource because thinking is a special quality of human. Due to its quality, human uses all the resources given by nature and only with these resources does man fulfill his needs. Resources and humans are mutually related. In which human is important because man creates new creation through his judicious actions. Which is called human civilization? The mutual and mental capacity of a human being is able to put a country, state, society and family in the developed category. But in countries where human being is neglected or not used in a planned manner, it cannot develop despite being a full human resource, hence human resource is the concept that allows the population to have more assets than its obligation on the economy as it displays. As a result of investment in basic services like education, training and medical, etc., the population is transformed into human resources. That is, the economic, geographical development of any country depends on the natural resources and size of the population, its design and efficiency. Therefore, for any nation, the full support of its population brings it under the concept of resources. Through the main methods of human resource development, skills and capabilities can be known which provide high level of results. It is clear from all these points that human resource is the only factor that places someone in a developed category.

मुख्य शब्द : मानव संसाधन, जनसंख्या, अर्थव्यवस्था, प्रादेशिक वितरण।
Human Resources, Population, Economy, Territorial Distribution

प्रस्तावना

मानव संसाधन वह अवधारणा है जो जनसंख्या को अर्थव्यवस्था पर दायित्व से अधिक परिसम्पत्ति के रूप में देखती है। शिक्षा, परीक्षण और चिकित्सा सेवाओं में निवेश के परिणाम स्वरूप जनसंख्या मानव संसाधन के रूप में बदल जाती है और किसी प्रदेश के विकास के लिए मानव संसाधन महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता है अर्थात् किसी भी देश का आर्थिक विकास, प्राकृतिक संसाधन और जनसंख्या के आकार, बनावट और कार्यक्षमता पर निर्भर करता है। मानव एक क्रियाशील, गत्यात्मक संसाधन होता है क्योंकि चिन्तन करना मानव का एक विशेष गुण है। अपने इसी गुण के कारण मानव प्रकृति द्वारा दिये गये समस्त संसाधनों का प्रयोग करता है। संसाधन और मानव पारस्परिक रूप से संबंधित होते है इसलिए विभिन्न क्षेत्रों में मानव संसाधन की जनसंख्या, उसका प्रादेशिक वितरण, जनसंख्या वृद्वि, संरचनात्मक विशेषताओं, क्षमता तथा उसकी समस्याओं का अध्ययन महत्त्वपूर्ण है। मानव शारीरिक और मानसिक क्षमता ही किसी देश, राज्य, समाज और परिवार को विकसित श्रेणी में खडा करने में सक्षम होती है। लेकिन जिन देशों में मानव की उपेक्षा की जाती है या नियोजित ढंग से उनका उपयोग नहीं किया जाता तो पूर्ण मानव संसाधन होने के बाबजूद भी विकसित नहीं हो पाता। इसलिए ही मानव संसाधन वह अवधारणा है जो कि जनसंख्या को अर्थव्यवस्था पर उसके दायित्व से अधिक परिसम्पत्ति के रूप में प्रदर्शित करती है। शिक्षा, प्रशिक्षण एवं चिकित्सा जैसी आधारभूत सेवाओं आदि में निवेश के परिणाम स्वरूप जनसंख्या मानव संसाधन में बदल जाती है। वास्वत में मानवीय संसाधनों का प्रबंधन करना सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य है क्योंकि अन्य सभी संसाधनों का उचित अथवा अनुचित उपयोग मानवीय तत्वों पर निर्भर करता है। मानव संसाधन विश्लेषण के द्वारा जनशक्ति में किये विनियोग के लिए नीति निर्धारण की जाती है जिसके द्वारा विकासशील राष्ट्रों के सीमित संसाधनों को कुशलता के साथ उपयोग हो सके। इसके द्वारा मानव संसाधन का बेहतर उपयोग करने के मार्ग में आने वाली बाधाओं का समाधान संभव हो पाता है। मानव संसाधन विकास की मुख्य विधियों के द्वारा उन कुशलताओं व क्षमताओं के स्तरों के बारे में जाना जा सकता है। जो उच्च प्रतिफल प्रदान करते है तथा आर्थिक विकास हेतु सहायक होते है। इस प्रकार प्रत्येक सीमित संसाधनों के बेहतर प्रयोग की संभावना बढ़ जाती है। आज का प्रशिक्षित व शिक्षित समाज राष्ट्र विकास का सबसे सबल एवं सबसे बड़ा संसाधन भी है। मानव संसाधन की उत्कृष्टता क्षमता के विकास के द्वार की प्रथम कुंजी है, उसी कारण सारे विश्व में सभी अर्थशास्त्री, समाजवेत्ता एवं भुगोलवेत्ता आज मानव को उत्कृष्ट संसाधन मानते है। इन सब बिन्दुओं से स्पष्ट होता है कि मानव संसाधन ही एक ऐसा कारक है जो कि राष्ट्र को विकसित श्रेणी में स्थान दिलाता है।

अध्ययन के उद्देश्य

अध्ययन क्षेत्र में मानव संसाधन के स्वरूप का अध्ययन करना।

1. जनसंख्या वृद्वि की दिशा व प्रतिरूप का अध्ययन करना।
2. जनसंख्या वितरण एवं घनत्व के क्षेत्रीय प्रतिरूप का अध्ययन करना।
3. भरतपुर जिले में मानव विकास से संबंधित गुणात्मक पहलुओं – शिक्षा, स्वास्थ्य, आय, कृषि, पशुपालन, उद्योग आदि का अध्ययन करना।
4. मानव विकास के विभिन्न क्षेत्रों के लिए भविष्य की दिशाएँ प्रस्तुत करना ताकि आगामी नियोजन में मदद मिल सके।

अध्ययन क्षेत्र का परिचय

भरतपुर को राजस्थान का पूर्वी सिंहद्वार, पक्षियों का स्वर्गस्थल, राजस्थान का प्रवेशद्वार कहते है। भरतपुर जिला 26^0 22′ से 27^0 50′ उत्तरी अक्षांश से 76^0 33′ से 78^0 17′ पूर्वी देशान्तर में स्थित है। जिले का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 5066 वर्गकिलोमीटर है। भरतपुर की समुद्र तल से औसत ऊँचाई 183 है। 2011 की जनसंख्या के अनुसार भरतपुर की कुल जनसंख्या 2,54,8462 यहाँ जनघनत्व 5030 व्यक्ति है। भरतपुर के पूर्व में उत्तर प्रदेश (आगर एवं मथुरा), पश्चिम में अलवर व दौसा एवं उत्तर में हरियाणा (गुडगांव), दक्षिण में धौलपुर और करौली है। भरतपुर जिले में 7 विधानसभा क्षेत्र तथा 10 तहसीलें है। यहाँ की मुख्य नदियों में रूपारेल, बाणगंगा, गंभीर मुख्य है जो जिले में से होकर गुजरती है।

ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-3* April- 2021
Innovation The Research Concept

परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत शोध में निम्न परिकल्पनाओं के परीक्षण का प्रयास किया गया है –

1. जिले की अर्थव्यवस्था पूर्णतः कृषि संसाधन पर आधारित है।
2. जनसंख्या का गुणात्मक पहलु सामाजिक–आर्थिक विकास को प्रभावित करता है।
3. जिस दर से जनसंख्या वृद्वि हुई है, उस दर से मूलभूत सुविधाएं नहीं बढी है। इन्हीं परिकल्पनाओं को क्षेत्रीय अध्ययन द्वारा पोषित या अपोषित करने के लिए आगमनात्मक एवं निगमनात्मक विधियों का सहारा लिया गया है।

विषय वस्तु

मानव संसाधन के विभिन्न घटकों के अन्तर्गत जनसंख्या वृद्वि, वितरण, जनसंख्या घनत्व, व्यवसायिक संरचना, सामाजिक संरचना आदि को सम्मिलित किया जा सकता है।

जनसंख्या वृद्वि

किसी भी स्थान के जनसंख्या विश्लेषण में जनसंख्या वृद्वि का अध्ययन महत्त्वपूर्ण होता है। जनसंख्या का वृद्वि का अध्ययन किसी भी क्षेत्र के आर्थिक विकास, सामाजिक चेतना, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, ऐतिहासिक घटनाओं को समझने के लिए आवश्यक है।जनसंख्या वृद्वि का अर्थ किसी विशेष समय के लिए देश या राज्य के निवासियों की संख्या में परिवर्तन से है। जनसंख्या वृद्वि निरपेक्ष एवं प्रतिशत दोनो रूपों में व्यक्त की जाती है। किसी भी क्षेत्र में जनसंख्या वृद्वि प्राकृतिक रूप से एवं प्रवजन द्वारा हो सकती है। सारणी–1 को देखने से प्रतीत होता है कि 1901–21 जनसंख्या वृद्वि दर में कमी हुई इसका कारण महामारी रहा है। सन् 1931 के बाद जनसंख्या में लगातार वृद्वि हो रही है। परन्तु जनसंख्या वृद्वि में उतार चढाव देखने को मिलता है। 1951 में जनसंख्या वृद्वि दर में 1941 की तुलना में कमी दर्ज हुई। जिसका कारण भारत विभाजन था। 1961–71 के दौरान जिले की जनसंख्या वृद्वि दर में लगातार क्रमशः 29.91 व 31.07 प्रतिशत वृद्वि हुई जिसका मुख्य कारण स्वास्थ्य सेवाओं में वृद्वि के परिणामस्वरूप मृत्यु दर में कमी का होना रहा है। सन् 1971 के बाद जनंसख्या वृद्वि दर लगभग स्थिर या कमी होती रही है। जिसका मुख्य कारण समाज में परिवार नियोजन के प्रति बढती जागरूकता है। संसाधनों के समुचित उपयोग के लिए जनसंख्या और संसाधनों के मध्य उचित अनुपात होना आवश्यक है। इसलिए हम जिले की जनसंख्या को नियंत्रित रखने के लिए कदम उठाने चाहिए। जिससे संसाधन एवं मानव के मध्य उचित अनुपात बना रहे। अगर जनसंख्या तेजी से बढेगी तो विकास की गति कम होती जायेगी। अतः हमें जनसंख्या को स्थिर बनाये रखने के लिए विभिन्न कार्यक्रमों व योजनाओं को चलाना चाहिए।

सारणी :– 1 भरतपुर जिले में जनसंख्या वृद्वि (1901–2011)

जनगणना वर्ष	पुरूष	स्त्री	कुल जनसंख्या	दशकीय अन्तर	दशकीय अन्तर प्रतिशत	1901 से प्रतिशत अन्तर
1901	3,21,466	2,76,270	5,97,736	-----	-----	
1911	2,97,249	2,49,984	5,47,233	-50,503	-8.45	-8.45
1921	2,65,609	2,17,927	4,83,536	-63,697	-11.64	-19.11
1931	2,68,781	2,25,071	4,93,852	+10,316	+2.13	-17.38
1941	3,12,119	2,62,073	5,74,192	+80,340	+16.27	-3.94
1951	3,27,708	2,77,188	6,04,896	+30,704	+5.35	+1.20
1961	4,22,631	3,63,174	7,85,805	+1,80,909	+29.91	+31.46
1971	5,55,136	4,74,794	10,29,930	+2,44,125	+31.07	+72.31
1981	7,02,595	5,95,683	12,98,278	+2,68,348	+26.05	+117.20
1991	9,01,114	7,49,610	16,50,724	+3,52,446	+27.15	+176.16
2001	11,32,857	9,67,163	21,00,020	+4,49,296	+27.22	+251.33
2011	13,55,726	11,92,736	25,48,462	+4,48,442	+21.35	+326.35

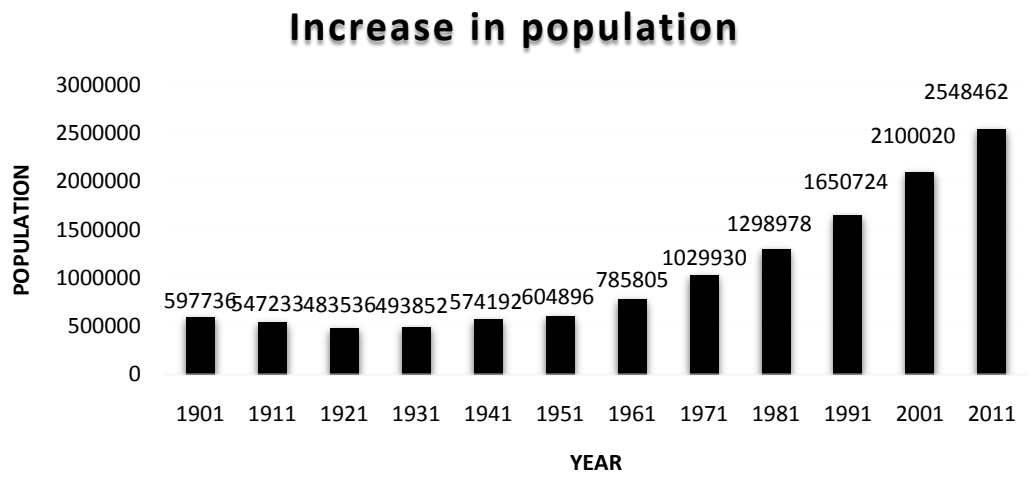

जनसंख्या वितरण

जनसंख्या वितरण में किसी स्थान की आर्थिक, सामाजिक व सांस्कृतिक कारकों का महत्त्वपूर्ण योगदान है। जनसंख्या वितरण प्रतिरूप वस्तुतः भौगोलिक और सांस्कृतिक दोनों ही कारकों की अन्तक्रिया का परिणाम है। संसाधनों पर मानव जनसंख्या के बढते दबाव के आंकलन एवं किसी भी क्षेत्र के सामाजिक–आर्थिक विकास में जनसंख्या वितरण सहायक सिद्व होता है। अतः जनसंख्या के अध्ययन में किसी स्थान विशेष की भूमि का एवं उस पर विकसित जनसंख्या के परिज्ञान हेतु जनसंख्या वितरण का अध्ययन आवश्यक होता है। भरतपुर जिले की जनसंख्या 2011 की जनगणना के अनुसार 2548462 है। जिले में भरतपुर में तहसील में सर्वाधिक जनसंख्या निवास करती है। पहाडी तहसील में न्यूनतम जनसंख्या निवासी करती है। भरतपुर जिले में ग्रामीण जनसंख्या कृषि पर निर्भर है। जिले का जनसंख्या घनत्व भी अधिक है जिसका कारण यहाँ पर नदियों की उपजाऊ मिट्टी का होना है। अतः यहाँ पर संसाधनों का समुचित उपयोग करके कृषि संबंधित सुविधाओं को बढाना चाहिए तथा लघु कुटीर उद्योगों को बढावा देने की आवश्यकता है।

सारणी – 2 भरतपुर जिले की जनसंख्या का स्थानिक वितरण (2011)

क्र0सं0	जिला/तहसील	जनसंख्या		
		पुरूष	स्त्री	योग
	भरतपुर जिला	13ए55ए726	11ए92ए736	2548462
01.	पहाडी	103529	95368	198897
02.	कामां	107561	96388	203949
03.	नगर	127731	114127	241858
04.	डीग	120672	106038	226710
05.	नदबई	114870	100266	215136
06.	कुम्हेर	106842	94499	201341
07.	भरतुपर	240536	212479	453015
08.	वैर	149259	130833	280092
09.	बयाना	146383	123129	269512
10.	रूपवास	138343	119609	257952

साक्षरता

आज का युग शिक्ष का युग है जिसमें हर व्यक्ति का साक्षर होना अतिआवश्यक है। साक्षरता से तात्पर्य उन व्यक्तियों से जो किसी भी भाषा को पढ़ लिखे सके। साक्षरता वह मापदण्ड है जो किसी क्षेत्र की जनसंख्या की गुणवत्ता को निर्धारित करता है। शैक्षणिक स्तर का सीधा संबंध प्रवास, विवाह तथा अन्य जनांकिकीय विशेषताओं से होता है। जिले में 70.11 प्रतिशत (2011) साक्षरता है। जनगणना वर्ष 2011 में सर्वाधिक साक्षरता 77.98 प्रतिशत भरतपुर तहसील की है और जिले में सबसे कम साक्षरता 56.42 प्रतिशत पहाडी तहसील में है। जिले में साक्षरता की स्थिति संतोषजनक है। परन्तु जिले में पुरूषों की तुलना महिला साक्षरता (54.24) कम है। अतः इसे हमें बढावा देने की आवश्यकता है।

सारणी – 3 भरतपुर जिले की साक्षरता 2011

क्र.सं.	जिला/तहसील	साक्षरता		
		पुरूष साक्षरता	स्त्री साक्षरता	कुल साक्षरता
		84.10	**54.24**	**70.11**
01.	पहाडी	73.38	37.99	56.42
02.	कामां	76.98	43.59	61.21
03.	नगर	79.47	47.21	64.22
04.	डीग	83.42	53.52	69.42
05.	नदबई	88.33	58.02	74.18
06.	कुम्हेर	88.41	59.24	74.70
07.	भरतपुर	88.56	66.09	77.98
08.	वैर	85.15	53.83	70.48
09.	बयाना	83.10	52.11	68.94
10.	रूपवास	86.48	55.16	71.94

लिंगानुपात

लिंगानुपात से तात्पर्य किसी जनंसख्या में सभी आयु वर्गो के कुल स्त्रियों व पुरूषों का अनुपात है। लिंगानुपा किसी क्षेत्र के सामाजिक व आर्थिक दशाओं का सूचक होता है इसका प्रभाव जनसंख्या के वृद्वि, दर, विवाह तथा व्यवसायिक संरचना जैसे अन्य जनांकिकीय गुणों पर भी पडता है। किसी क्षेत्र विशेष की जनसंख्या के संसाधन उपयोग प्रतिरूप और संसाधन आवश्यकता एवं विकास को समझने के लिए लिंगानुपात का अध्ययन आवश्यक होता है। भारत में लिंगानुपात पुरूषो पर प्रति हजार महिलाओं की संख्या में व्यक्त किया जाता है। भरतपुर जिले में पुरूषों की तुलना में महिलाओं की संख्या कम है। यह प्रति हजार पुरूषों पर 880 महिला है। जो राजस्थान के लिंगानुपात से कम है। सारणी से ज्ञात होता है। कि 2011 में पहाडी तहसील का लिंगानुपात 921 जो सर्वाधिक है। बयाना तहसील का लिंगानुपात सर्वाधिक कम 841 है। अतः भरतपुर जिले में लिंगानुपात राज्य की तुलना में कम है। अतः हमें लिंगानुपात में सुधार के लिए आवश्यक कदम उठाने चाहिए।

सारणी :– भरतपुर जिले में लिंगानुपात (2011)

क्र.सं.	जिला/तहसील	लिंगानुपात
	भरतपुर जिला	880
01.	पहाडी	921
02.	कामां	896
03.	नगर	893
04.	डीग	879
05.	नदबई	873
06.	कुम्हेर	884
07.	भरतपुर	883
08.	वैर	877
09.	वैर	841
10.	रूपवास	865

सारणी :– भरतपुर जिले में स्त्री पुरूष अनुपात प्रति हजार (1901–2011)

जनगणना वर्ष	लिंगानुपात	दशकीय अन्तर
1901	859	-
1911	841	-2.10
1921	820	-2.50
1931	837	2.07
1941	840	0.36
1951	846	0.71
1961	859	1.54
1971	855	-0.47
1981	848	-0.82
1991	832	-1.89
2001	854	2.64
2011	880	3.04

निष्कर्ष

यह शोध सुझाव देता है कि मानव संसाधन का सर्वोत्तम प्रभावपूर्ण ढंग से उपयोग करने से पहले कल्याण सुविधाओं का विस्तार कर मानव संसाधन का विकास करना चाहिए। मानव संसाधन विकास की विधियों के द्वारा उन कुशलताओं और क्षमताओं को जाना जा सकता है जो किसी क्षेत्र के विकास के लिए आवश्यक होती है। वांछित आर्थिक विकास के लिए नियोजित विकास की आवश्यकता होती है। जिले में औद्योगिक विकास किया जाना आवश्यक है। किसी भी क्षेत्र में संसाधनों का सुनियोजित उपयोग तभी होगा। जब वहॉ पर साक्षरता हो। अतः जिले में पुरूषों की तुलना में स्त्रियों में साक्षरता प्रतिशत कम है। उसे हमें बढाने की आवश्यकता है। जिले में जनसंख्या निरन्तर बढ रही है एवं संसाधन सीमित मात्रा में है। अतः हमें भविष्य के सभी विकास न केवल वर्तमान जनसंख्या बल्कि आगे के वर्षो की जनसंख्या को ध्यान में रखकर किये जाने चाहिए एवं जिले में लघु कुटीर उद्योगो को बढावा दिया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *गोपाल जी.एस. (1984) पोपूलेशन ज्योग्रॉफी इन इण्डिया, परगमन प्रेस, ऑक्सफोर्ड पेज नं0 49*
2. *अग्रवाल एस.एन. पोपूलेशन ज्योग्रॉफी नेशनल बुक ट्रस्ट*
3. *Census of Bharatpur : 191-2011*
4. *मौर्य साहबद्दीन (2005) भूगोल, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद पेज – 217*
5. *चौहान टी.एस. (1986) हूमन रिसोर्स फोर इकॉनोमिक डवलमेन्ट प्लानिंग इन ड्राईलैण्डस ऑफ राजस्थान*
6. *कलवार एस.पी. (1984) सोशियों इकॉनोमिक फैक्टर्स लीडिंग टू चेजन इन द पैटर्न*
7. *दूबे आर.एन.एण्ड सिन्हा वी.एस. (1981) क्मअमसवचउमदज मदक चसंददपदह (हिन्दी) नेश्नल पब्लिशिंग हाउस, न्यू देहली।*
8. *क्लॉड प्रिस्टॉन (1970) रिर्सोसेज, पोपूलेशन एण्ड क्वालिटी ऑफ लाईफ इन इज थ्री इन ऑप्टीमम लेवल ऑफ पोपूलेशन, एडिट वाय एस. फ्रेड सिंगर ए पोपूलेशन।*